https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.019

वैश्विक स्तर पर भारतीय समकालीन कला का योगदान

आकाश कुमार वर्मा
शोध छात्र
चित्रकला विभाग
आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय,
बिजनौर

डॉ0 नीरू
असिस्टेंट प्रोफेसर
चित्रकला विभाग
आर0बी0डी0 महिला महाविद्यालय
बिजनौर

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 13.05.26
Approved: 28.06.26

आकाश कुमार वर्मा
डॉ0 नीरू

वैश्विक स्तर पर भारतीय समकालीन कला का योगदान

Vol. XVII, Sp. Issue June.2026
Article No.19, Pg. 153-155

Similarity Check: 03%

Online available at
https://anubooks.com/special-issues?url=jgv-si-rbd-bijnor-june-2026

DOI: *https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.019*

सारांश

भारतीय समकालीन कला ने 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तथा 21वी शताब्दी में वैश्विक कला जगत में अपनी विशिष्ठ पहचान स्थापित की भारतीय कलाकारों ने परम्परा और आधुनिकता के समनवय के माध्यम से ऐसी कलात्मक अभिव्यक्तियाँ विकसित की है। जो भारतीय सांस्कृतिक विरासत को वैश्विक संदर्भों से जोड़ती है। वैश्विकरण, तकनीकी विकास तथा अंतरर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनियों के विस्तार में भारतीय समकालीन कला को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया है। भारतीय कलाकारों ने सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय तथा मानवीय मुद्‌दों की अपनी कला का विषय बनाकर वैश्विक विमर्श को सम्रद्ध किया है।

इस शोध पत्र में भारतीय समकालीन कला के विकास, प्रमुख कलाकारों, वैश्विक प्रभाव, सांस्कृतिक योगदान तथा समकालीन चुनौतियों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय समकालीन कला ने केवल भारतीय सांस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई है। बल्कि वैश्विक कला परिदृश्य को नयी दृष्टि और अभिव्यक्ति प्रदान की है।

मुख्य शब्द

भारतीय समकालीन कला, वैश्वीकरण सांस्कृतिक पहचान, आधुनिक कला, अंतरर्राष्ट्रीय कला बाजार, समकालीन कलाकार।

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of JGV.*

भारतीय समकालीन कला वर्तमान समय की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक परिस्थितियों की कलात्मक अभिव्यक्ति है। यह कला केवल सौन्दर्य बोध तक सीमित नहीं है। बल्कि समाज की जटिलताओं, मानवीय अनुभवों और वैश्विक चुनौतियों को भी अपने भीतर समाहित करती है।

भारतीय कला की परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध रही है। किन्तु समकालीन कला ने उसे आधुनिक संदर्भों में पुनर्परिभाषित किया है। आज भारतीय कलाकार अपनी रचनात्मकता प्रयोग धार्मिता और सांस्कृतिक चेतना के कारण विश्व कला जगत में सम्मानित स्थान प्राप्त कर चुके है।

स्वतन्त्रता प्राप्त के पश्चात भारतीय कला में नए विचारों और प्रयोगों का विकास हुआ कलाकारों ने परम्पारिक कला शैलियों और सांस्कृतिक प्रतीकों को आधुनिक तकनीकों एवं दृष्टिकोणों के साथ प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया। इस प्रक्रिया ने भारतीय कला को एक नई पहचान प्रदान की भारतीय समकालीन कला में स्थानियता और वैश्विक का अदभुत समनवय देखने को मिलता है। कलाकार भारतीय समाज, सांस्कृतिक और इतिहास से प्रेरणा लेते हुए वैश्विक मुद्दों को भी अपनी रचनाओं में स्थान देते हैं।

भारतीय समकालीन कला के विकास में अनेक प्रमुख कलाकारों का योगदान रहा। मकबूल फिरा हुसैन ने भारतीय मितको, लोकजीवन और सांस्कृतिक प्रतीकों को आधुनिक शैली में प्रस्तुत किया।

एस0एच0 रजा ने भारतीय दर्शन और अध्यात्मिकता को अपनी कला का आधार बनाया, तैय्यब मेहता ने मानव जीवन के संघर्श और पीड़ा को प्रभावशाली रूप से अभिव्यक्त किया। इसी प्रकार अनीश कपूर और सुबोध गुप्ता जैसे कलाकारों ने अंतरर्राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय कला को नयी प्रतिष्ठा प्रदान की।

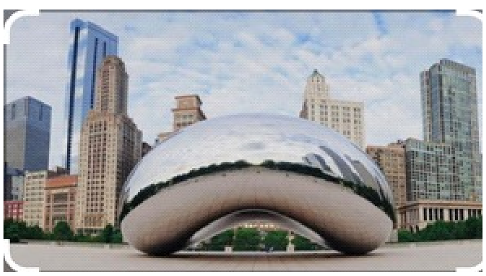

भारतीय समकालीन कला सबसे महत्वपूर्ण योगदान भारतीय संस्कृति का वैश्विक प्रसार है। भारतीय कलाकारों ने अपनी कृतियों में भारतीय मिथको, धार्मिक प्रतीकों, लोक परम्पराओं और संस्कृतिक मूल्यों को रचनात्मक रूप में प्रस्तुत किया है। इससे विश्व समुदाय को भारतीय संस्कृति की विविधता और समृद्धि को समझने का अवसर मिला है। भारतीय कला आज सांस्कृतिक कूट नीति का एक प्रभावी माध्यम बन चुकी है। वैश्वीकरण ने भारतीय समकालीन कला को व्यापक मंच प्रदान किया है। डिजिटल तकनीकों, इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से भारतीय कलाकारों की पहुँच विश्व भर में बढ़ी है। आज भारतीय कलाकार अंतरर्राष्ट्रीय प्रदर्शनियों कला मेलो, संग्रहालयों और विनालय में सक्रिय भागीदारी कर रहे हैं। इससे भारतीय कला को वैश्विक पहचान मिली है और अंतरार्राष्ट्रीय कला बाजार में उसकी स्थिति सुदृढ़ हुयी है।

भारतीय समकालीन कला वैश्विक मुद्दों के प्रति भी संवेदनशील रही है। पर्यावरण संरक्षण, लैंगिक समानता, मानवाधिकार, प्रवासन, पहचान और साजिक न्याय जैसे विषयों को भारतीय कलाकारों ने अपनी रचनाओं में प्रमुखता से स्थान दिया है।

इस प्रकार भारतीय कला वैश्विक समस्याओं और मानवीय चिंताओं पर विचार विमर्श का सशक्त माध्यम बनी है। अंतरर्राष्ट्रीय कला बाजार में भारतीय कलाकारों की बढ़ती उपस्थित भी भारतीय समकालीन कला की

https://doi.org/10.31995/jgv.2026.v17iSI06.019

उपलब्धियों का प्रमाण है। विश्व के प्रमुख नीलामी घरों और कला दीर्घायों में भारतीय कलाकारों की कृतियों की मांग लगातार बढ़ रही है। इसी से भारतीय कला को आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों स्तरों पर लाभ प्राप्त हुआ है। साथ ही युवा कलाकारों को भी अंतरर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के अवसर प्रदान हुये हैं। हलांकि भारतीय समकालीन कला के समक्ष कुछ चुनौतियां भी विद्यमान है। कला का बढ़ता व्यवसायीकरण, पश्चिमी कला बाजार का प्रभाव, सांस्कृतिक मूल्यों की संरक्षण की आवष्यकता तथा कला शिक्षा और संसाधनों की सीमायें प्रमुख चुनौतियां है फिर भी भारतीय कलाकार अपनी सृजनात्मकता और सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से इन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं।

निष्कर्ष

भारतीय समकालीन कला ने वैश्विक कला जगत की नयी दिशा, नये विचार और नयी संवेदनायें प्रदान की है। इसने भारतीय सांस्कृति को विश्वमंच पर प्रतिष्ठित किया है तथा विभिन्न संस्कृतियों के मध्य संवाद को मजबूत बनाया है। भारतीय कलाकारों की रचनात्मकता, नवाचार और सांस्कृतिक दृष्टि ने समकालीन कला को समृद्धि किया है। भविष्य में भारतीय समकालीन कला की वैश्विक भूमिका और अधिक प्रभावशाली होने की संभावना है।

संदर्भ

1. कपूर, गीता – समकालीन भारतीय कलाकार।
2. चतुर्वेदी, डॉ ममता – समकालीन भारतीय कला।
3. भारद्वाज, विनोद – बृहद आधुनिक कला कोश।
4. साखलकर, र0वि0 – आधुनिक चित्र कला का इतिहस।
5. मांगो, प्राण नाथ – भारतीय समकालीन कला।
6. डालमिया यशोधरा – आधुनिक भारतीय कला का निर्माण।
7. समकालीन भारतीय कला संबंधी प्रदर्शनी कैटलॉग।
8. भारतीय समकालीन कला पर शोध पत्रिकाएं।
9. राज्य ललित कला अकादमी से प्रकाशित पत्रिकाएं।
10. शोध पत्र एवं जनरल।